<u>मैथिली</u>

स्नातक -(प्रतिष्ठा)
पत्र - चतुर्थ
प्रथम व्याख्यान

डा० राज कुमार राय
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग,
वि० वि० जनता महाविद्यालय, राजनगर

मैथिली साहित्यमे धार्मिक नाटक -

आदि कालहिसँ मिथिला धर्म प्रधान प्रदेश रहल अछि। परोपकारक भावना, सत्य वादिता, व्यापक दृष्टिकोण, समान्य जीवन एवं उच्च विचारक ज्वलन्त उदाहरण मिथिलाक लोक जीवन मे अनायासहि भेटि जाइछ। मैथिलीक नाटक मध्य हुनका सबहिक प्रतिबिम्ब स्पष्ट रुपसँ पड़ल। अठारहो या पुराण सँ इएह अन्तिम निष्कर्ष बहराएल अछि जे परोपकार करब पुण्य थिक धर्म थिक तथा दोसर के कष्ट देब पाप थिक। जकरा लोक धारण कएने रहइ तँ भेल धर्म तथा लोक तँ नीकेँ वस्तुकेँ धारण किंवा ग्रहण करबाक इच्छा करैछ। सत्य बाजब परोपकार करब, भगवान भजन करब - सबहिक हेतु समान रुपे उपादेय थिक। इएह सब तँ समस्त धर्मक मूल मे अछि। हमरा लोकनि केँ विभिन्न पुराण तथा उपनिषद् मे तँ एहो सएह सब देखाओल गेल अछि। समस्त पौराणिक नाटक

Scanned with CamScanner

सभ मे इएह धार्मिक तत्व छैक। ई पौराणिक अनेक नाटक सभ अछि - जाहिमे ईश्वरक विभिन्न लीलाक प्रदर्शन, असत्य पर सत्यक तथा पाप पर पुण्यक विजय प्रदर्शित कएल गेल अछि ओ सभटा हमरा अनेक धार्मिक नाटक थिक। पौराणिक नाटक सभ तँ अनायासहि धार्मिक नाटकक श्रेणी मे चल अबैछ तथा मैथिली मे एहि प्रकारक पौराणिक नाटकक रूपमे धार्मिक नाटकक परम्परा पूर्वहि सँ चलि आबि रहल अछि परन्च मध्यकाल मे एहि रूपक धार्मिक किंवा पौराणिक नाटक सभहिक रचना मिथिला - भाषा मे प्रचुर रूपेँ भेल। काव्यक जे वर्गीकरण श्रव्य ओ दृश्य काव्यक रूपमे भेल ताहि मे दृश्य काव्य कें श्रव्य काव्यसँ विशेष महत्व एहि कारणे प्रदान कएल गेल जे जतए श्रव्य काव्यक प्रभाव शिक्षित वर्गहि धरि सीमित रहि जाइछ ततए दृश्य काव्यक प्रभाव साक्षर सँ लए निरक्षर समुदाय धरि पूर्ण पड़ैछ।

नाटक एहि दृश्य काव्यक एक टा प्रमुख शाखा किंवा अंग थिक। नाटक कें काव्यक 'रम्य' मानल गेल अछि - नाटक कें पञ्चम वेद सेहो कहल गेल।

क्रमशः!